CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

वे-३८ ६३

वे सं ८६६७

श्रीशंकर अन्नेजी कृत

श्रीसीतारामसिद्धान्त मुक्तावली

सीतारामसिद्धांतमुक्तावली

२२६६

१४८

Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

दोहा

श्रीजानकी वल्लभो विजयतेतराम्॥ कुधिषकिरीटमणि छविविलसन वदनखर धुनेः श्रीमन्महाराज
सार्वभौमस्य पंक्तिरथास्यात्मजस्य सर्व सद्गुणसंवेदिनस्यश्रीमिथिलेशात्मजावल्लभस्यानिवल्ल
भायनस्यादाम्बुजमधुपमणेश्रीमन्मारूतेनंनामधनमः॥ निजगुरुपदरजवंदि पुनि सुमिरि
पवनसुतपाय॥ करौंसिद्धतासुखावलीगनिग्रंथनस्यदरसाय॥१॥जगनदुखदत्रियजानिकेपाजेज
सबवहार॥रामसमिलनहितखोजहींसोपुनिसंतउदार॥२॥कलिपाखंडीभेषबहुमूलेनहिजेहि टे
खि॥तुलसीहरिजूनामिलैवैष्नवभेहरिलेखि॥३॥वैष्नवतेसतगुणअधिकरामभक्तिजियजानु॥जि
नकेसरणासंतमिलेरामसियाहृदमानु॥४॥तिलकसधुरमालाभुजमूलेंकिनधनवान॥रामसि
यजुननामनिजरामभक्तिनिहिजान॥५॥रामभक्तकोगुरुकरिउरधरिसबनेहिहीनि॥निकटरहैंसबसं
दापदपंकजअनुरागी॥६॥गुरुप्रसादभोजनकरेगुरुपदोदकपान॥गुरुअज्ञानिअनसरेगुरुमूरति
करिध्यान॥७॥अर्पेनिजसियरामकोनसतधनगुरुहांथ॥गुरुअज्ञातेअनसरेसेवासियरघुनाथ॥८॥धा
रेनिजगुरुहांथकरिधनजाकेसबचिन्ह॥अरेअभिनअज्ञानदरपाइनिधीजिमिखिन्ह॥९॥अर्द्धइंदु
श्रीविजुजनकरेजुतिलकसुलेख॥भौंनेकेषप्रयन्नअतिललितलिखेयुगरेख॥१०॥बांयेकरपुनिधनु
धलिखिदहिनेकरयुगबान॥नामसुद्रिकाहृदेलिखभालचन्द्रिकाजान॥११॥कंठलसतधारेयुग

Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

सियवर महल निवास ॥२४॥ योगी जन विनवहिं संगन जिकरि वेरसिक न संग ॥ रसिक संग करि होन जिय सियपिय
मिलन सुढंग ॥२५॥ ज्ञानी योगी करन संग जेन जिर सिक न संग ॥ सूखग र्न सेवन करन सठ न त्रिपावन गंग ॥२६॥ ज्ञा
न योग आश्रय करन त्याग सुभक्ति उदार ॥ वालि शङ्कर दूर की वेठन न जिसहकार ॥२७॥ राम रूप सुख
न हीं कहीं योध्यावन निन हन ॥ निधि की निश्व चरपाइ येज हीं न सेरक चेन ॥२८॥ विनु भक्ति नर जन्म वृ क
रिहो न पुनीत ॥ राम भक्ति न वपावहीं कहु न निगम अस नीत ॥२९॥ राम भक्ति भई जानि येमन आन न्य आस तेय
जो चातक न जिस्वा निजल पिय न सुरस रितोय ॥३०॥ योग ज्ञान वैराग दृढ सुमति सा धुगति धन्य ॥ जग पिन
गदुर्ल्लभ नहि दुर्ल्लभ गती अनन्य ॥३१॥ फीके विन अन्न नाय घपि वडे महान ॥ सुंदर नावर वादस व विना
नाक आहु काने ॥३२॥ त्यागमनो पंचायती सियर घुवर एक इहैं करि येअ सजिय जानि के वहु न न आस
कनिहु ॥३३॥ चानक करि यकेइ नायस भाजन सुखमूल ॥ भवंरस दा रेवन फिरन फूल फूल की कूल ॥३४॥
सिमन वेसिय रामको जीहन येसिय राम ॥ हृदय ध्यान सिय राम को नही और सन काम ॥३५॥ जानेस वसिय राम के कला
विभूती शेश ॥ राम अनुशासन आनु सरन हरि हर वाहन रूस ॥३६॥ स वेउ पासक जानि येरा मसिया उपास्य ॥ जाचे
न कर संपुट किये दिजेनि पद दास्य ॥३७॥ इहि विधि चिन्ह वैस वर्य धरि पुनि सव विधि मा धुर्य्य ॥ धरे चिन्ह नेहि

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

गलसधुरतुलसिकादास॥रसिकियाजनसरनपदरवेग्रपनोनाम॥१२॥जपेनिनसियरामकेयुगलषड़
क्षरमंत्र॥ग्रंगन्यासध्यानादिसबकरेग्रादविधिनंत्रे॥१३॥इन्दुबिन्दुसियतिलकसियावररूपा॥युगलतिलक
उरजानिवेसवतिलकनमेभूप॥१४॥युगलतुलसिकामालगरयुगलतिलकजेकिभाते॥धनयवानग्रंकि
नभुजासोग्रनिसियसियलाल॥१५॥सियकीसुग्राचन्द्रिकारघुवरकेघनवान॥जोधारेनिजग्रंगमेसोरस
कलगुनखान॥१६॥विनुग्रचार्घ्यसंस्कारविनुमिलेनसियरघुलाल॥विनाउसीलेग्रासनहिसाकनहुंभूपा
ल॥१७॥सुहरद्धापनिजनामकीलिखदिवानकेहांथ॥नाहिदेखिकेसहिकरनरीतइहैसहिनाथ॥१८॥
पनिगासानन्मजेरसिकनाहिगुरुधारि॥धारेसबसंस्कारग्रंगनवहिंसहीसरकार॥१९॥येग्रनन्यसियरामके
रसिकभक्तगुणखानि॥इनजेनिनकोसकलविधिनिजकुटुम्बजियमानि॥२०॥ग्रसनादिकव्यवहारसबरवे
रसिकनसंग॥रसिकनकोबानोधरेसदाग्रापनेग्रंग॥२१॥मनवचक्रमकरिराखियेरामरसिकपदप्रीत॥तवै
उवैसियरामदोउकीरतियासुपुनीत॥२२॥संतलेशसहिनाघसमविघ्नभक्तजियजान॥सार्वभौमनृपको
टिसमरामभक्तग्रनुमानु॥२३॥रामभक्तकेदरसनेहोनसकलग्रघनाश॥सनसंगननेपाइये

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

जानि येरामभक्तअतिधूर्य्या॥३८॥जानेसबसियरामनेउद्भवपालननाश॥तीनशक्तिसियरामकी
रितीनमेवास॥३९॥हरिमेपालनसृजनविधिशंकरमेपुनिनाश॥त्रैसेप्रतिब्रह्मांडमेविधिहरिहरक
रवास॥४०॥महाविष्णुश्रीरामकेदिव्यगुननकोरूपा॥जानेतीनोजानियेविधिहरिहरत्रयभूप॥४१॥ज
नकसुताकेअंशतेमहालक्ष्मीगुणखानि॥जानेहरुतीनोभईउमारमाब्रह्मानि॥४२॥ब्रह्मजोकरुन
अतिरामसियाननभास॥व्यापतचरअरुअचरमेचिन्मयपरमप्रकाश॥४३॥कृष्णादिकअवता
रसबरामअंशतेजानु॥श्रीभूलीलातीनइहसियाअंशअनुमानु॥४४॥नामरूपलीलाविविधिधामअबध
सुखखानि॥येचारोसियरामकेपरतरवेदबखानि॥४५॥नारायणआदिकअमिनभगवतनामउदार॥
रामनामकेअंशतेसिद्धिकरुनश्रुतिचार॥४६॥सीतारामजोनामदोउसमत्रैसवर्ध्यउदार॥करुनईशना
एककीदोउकीउरधार॥४७॥गठनीबात्मबयेकनाअवनसमनगतिरोपु॥कपनयेकतेजानिहूसरहुं
तसहेय॥४८॥नारायणअष्टाक्षरीनामेसारकार॥करियेभिन्नरकारनोहतअसुद्धउचार॥४९॥नो
पनायअष्टाक्षरीपंचाक्षरीनशिचाय॥रेकारमकारकेनिहितपुनिफलदाय॥५०॥रामनामअं
शंसतेहोतप्रणवपुनिसिद्धि॥सोसबमंत्रनपरलमनुनाविनमंत्रअसिद्ध॥५१॥द्विभुजस्यामदशर

Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

पसुवन राम अरु जनक कुमारि॥ कारज कारण नेपरे इनहि कहन अनिचारि॥५२॥ राम रूप रूपवन पनी
पथा नृपनिपति राम॥ एक दुइ कगुण कहुं लसत राम अभिन गुनधाम॥५३॥ पद्मा श्री पति सुभग अति
सिय पतिसम नहि एज॥ चार भुजा वाहन गरुड सब वैभव की साज॥५४॥ गज घोरे अपाल की मनि मू
षित वर रंग॥ कोटिन सो अस वार पुन कोटिन कोटल संग॥५५॥ चतुरंगी सेना अमित चलत हलत अ
हिनाथ॥ वन्दीजन विरदावली वदत सो कोटिन साथ॥५६॥ कनक छुरी कर मनि जटित सो हअमित चो
पदार॥ कोटिन गावन जागरे करि करि जस विस्तार॥५७॥ नख नख छठि न्यवन सुभग वार मुखी वर सं
ग॥ भांड अमित अति कलरचि कर नत नाना रंग॥५८॥ समवय समवाहन चढि करि करि सम अंगा
र॥ संग सखा सो मित्र अमित छवि निधि राज कुमार॥५९॥ सौंज अनेक न कर धरे कोटिन किंकर सं
ग॥ वय समधुर सेवा चतुर छवि लखि मोहअनंग॥६०॥ या सोभा रघुनन्द की अनन कहुं दरसाया
नेरशिक नके हियेर छवर ही सर साय॥६१॥ कृष्ण चन्द्र व्रज योषिता मोहिं गाय सुनाय॥ नहिं कछु
रूप विशेषता मुग्ध मोह सुन गान॥६२॥ मिथिलापुर की त्रियन को र छवर मोह समाय॥ केवल रू
पविशेषता न हि कछु पेक्षि देखाय॥६३॥ यह अपि मोहिं योषिता कृष्ण चन्द्र छवि देखि॥ तद्वि
षय होनी कछु होनी हीं जिय लेखि॥६४॥ नारि मोह लखि पुरुष वर पुरुष मोह लेखि नारि॥ नहिं न अ

Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

नहोनी कछु कबि बुध करू नविचारि॥६५॥होनी होनी होय जहाँ नहाँ नअनहोनी जान॥अनहोनी कछु
होय नहाँ अनहोनि क्रिया बखान॥६६॥अनहोनी सोइ जानिये पुरुष रूप निधि देखि॥सोइ पुरुष वधु
त्व करि अनहोनी सोइ लेखि॥६७॥सीय निदेउ कबि बिनि मुनि भरत घुवर हि निहारि॥याते अनहोन
रूप श्रीराम हि को निरधारि॥६८॥अनहोनि रूप निहारि के सबजिय होत सुमोह॥बिबस न प्यावत पूर
नानेक न लाई छोह॥६९॥रिषभ गनी पुनि राक्षसी जाकर मनुज अहार॥मगन भई लखि राम
छबि करन चही भरतार॥७०॥खर दूषन आदिक सकल मोहे राम निहार॥लरे सो निज इच्छा
नहीं जिये बीर बिचार॥७१॥जैसे रघुवर रूप निधि सो मोहे सिय देखि॥पर नर नाक हाँ पाइये
अनि अनहोन छबि लेखि॥सोरठा॥लीला अधिक अपार रामादिक सियराम की॥यहै प्रमान उ
दार येक मुनि हिं मन को टिरचि॥७३॥पुनि मुनि और अपार बिधि शंकर शेषादिक बि॥नि ज
निज मति अनुसार गावत नित नव राम जस॥७४॥अवधस पर नर मध्य मनित्य सच्चिदानन्द म
य॥जहाँ राम नसिपरा मरा शादिक लीला बिबिधि॥७५॥सरित बर जहाँ सोइ श्री सरजू पावनि परम॥

Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

पानन्दसन्दोह राजनजनु जलरूपधरि॥६६॥राजनयीलसोपमसेजननैंनसोंश॥म्हांईपरनम
निसमसोजनवहुभूषनसजे॥६६॥लसतसेवासुवारसम्वरश्रेवरसोहहीं॥श्रहुनरूपउदारसर
जूसरिनास्वामिनी॥६७॥हुमकिनाहिसोइछत्रचंवरनरंगसुश्राजहीं॥घोषटुंदुभीश्रत्रनिस
दिनश्रहुतबाजहीं॥६८॥डुडूकूलमणिघटश्रटसोउच्चविराजहीं॥निजनिजनटसठठनो
दिनसोइश्रत्यवहु॥६९॥गंगोयमुनाश्रादिसरितसकलजगपावनी॥श्रोरश्रमितप्रागादिस
वकेइष्टवशिष्टजा॥७०॥रलसिलोचयराजजहींश्रनिशश्रहुनतेत्रनिधि॥वहुद्रुमकुंजविरा
जवोलतखगकरिमधुरस्वन॥७२॥मणिमिरिकंप्रासन्लसोमश्रवणवटसुभगश्रति॥जनु
चहुंओरसुविराजसियरघुवरकोविमलजस॥७३॥चहुंगोपुरचहुंमुक्तिसवनतिजपरिवा
रयुत॥कहुंनकुछुनिजयुक्तिमहिमाश्रवधसुविदितश्रति॥७४॥श्रजोधसतचहुंफेर
मध्यरूपतिमंदिरविशद॥तासुछविहिपहेरिविघ्नसटनफेकोलगे॥७५॥सौंध
सतमेध्योरश्रपवगादिकचारइहु॥घटेरहतचोपदारश्रोरनकुछुनहींकाजतेहि॥७
उमारमात्रमानिसियामहलसेवैसदा॥सारदचतुरसजानिनितकुनचरितसोगावहीं॥७

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

वृन्दावन वैकुंठ सबनिन कर अवधनिधान॥ अवधि प्रभाके अंसनेहोन सकल प्रभुमान॥ ८॥
सुन्दरनारीरूपधरि मावन भगवन धामा॥ अवध युगलपद सेइके होनर हिन परनामा॥ ९॥ अवध
मोदके अंश कौहै अंश वन गोलोक॥ ना केको हिन अंस को को हिन सुरपति श्लोक॥ १०॥ यथा अवध
मिथिलान थासुख सुखमा मर्यादा॥ इनहींस दाउ रधरि इमे जानेस वेवरवादा॥ ११॥ आर्य्या छंद॥
यदिरमयोक्त सर्वे विज्ञिमनेन नमारुते श्वरमं॥ सर्वेषोरशिकानांसीतारामार्पिन चेतसां॥ १२॥
इतिश्रीसीतारामसिद्धान मुक्तावली पूर्वभागः समाप्तः॥ अचेलो अनिअकाश जलअहंपंचम
पवमान॥ इनकेजोरचिन इहस्थूलनोहिकोपजान॥ १॥ पंचप्राण मनबुद्धि पुनिदश हूंइन्द्रिय स
मिन॥ सूक्षम अंगसो पंचविन दुखसुखसाधन हेन॥ २॥ प्रभुकी अविद्याशक्ति फुरमूढकही
नहिजाया॥ सोलखुकारनकाय सोवृद्धन वढस भाय॥ ३॥ प्रकृती अरूसवतत्व तेमिल्नजीवनि
जरूप॥ सो प्रभुसोनानो विसरिपस्यो मोहतम कूप॥ ४॥ पुनिसोरसिकन संगकरिलेय यारथज्ञान
नोसियर उवरहिसो निज स्वरूपपहिचान॥ ५॥ जानजीवसोवेव पुनिईश्वरहूंसोवेव॥ फिरवेदी नें

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

जो कहु न तिन्ह जान्यो नहि श्रुति भेव॥ ६॥ यथा ईश सिय राम जू द्वि भुज मानुषाकार॥ नित्य स
चिदानन्द घन लीला प्रबंध उदार॥ ७॥ तथा जीव नित हि प्रेश नित द्वि भुज मनुष्याकार॥ सच्चि
दरूप प्रनूपछ विप्रधिकारी परिवार॥ ८॥ यथा रूप निज भाव करि करे मान सी सेवा॥ प्राप्ति हुं न
सपावहीं रशिक जान हरु भेवा॥ ९॥ दास दासि प्रसखि सखा इनमे निजरुचि येक॥ नानो करि
सिय राम सों सेवे भाव विवेक॥ १०॥ होरी रास हिंडोलना सहलन प्रसिकार॥ इन लीलन की भावना
निजसुभाव प्रनुसार॥ ११॥ बसे प्रबध मिथिलापुवासा गसकल जिय प्रास॥ मिलि हैं सिय र
घुनन्द मोहि प्रस करि दृढ विस्वास॥ १२॥ पूजे नहि वहु देवना विधि निषेध नहि कर्म॥ सरनभ
रोसो येक दृढ हरु सरना गत धर्म॥ १३॥ जेय: सरणं रक्षतु सं ज्ञा कौसत एव॥ सत्वं रक्षति सर्वदा दा
शरथि: प्रभुरेव॥ १४॥ सरनागत सुखदानि सरणि पा निगुणानि वै॥ हृदये धारयता निमोक्षानी हु
वदा स्महं॥ १५॥ गुणगुणार्क सिय राम केता को करी विचार॥ निजप्रज्ञो ज्ञानसकस वमे रे भलो प्रकार
१६॥ वत्सलना सिय कीक हांप्रथम हिं देषु॥ भक्षि वभोजे दोष कौ वत्सलना सो हलेषु॥ १७॥ पापी वाश

करे

राम

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

भ्रम ज्ञान मान्यउ व्रत धर्म की नीत॥ ताहू पर दया करे आर्य्य न की रीत॥१८॥ इहै कल्यो श्री जान की पवन सु
नहिं समुझ्यो॥ दोष वनी सब राक्षसी लीन्ही ताहि बचायो॥१९॥ वहु रि विभीषन में इहै समय कहँ श्री राम
ताको सुमिरन की जीये वत्सलता को धाम॥२०॥ सनकादीश्वर मनवा नहू मित्र भाव करे को य॥ आवैना हि
न जो नहीं य दँवि दोष नेहि होय॥२१॥ पूर्व कृता गविचार निज उपजे प्रभु की संक॥ वत्सलता को सुमिरि
के करिये मनहिं निशंक॥२२॥ द्वितिये लख स्वामित्व गुण ता को अर्थ विचार॥ सब मे मानै आपनो सो स्वामि
त्व उदार॥२३॥ ताको हिये निधार के करिये मैत्र री॥ सम सबका न समझि हैं निज लखि करिहैं ऊरि॥२४॥
तृतिये लख सो सील गुण आनि निकृष्ट किन लेय॥ मानि विश्वास ऊरी करे कहि सुशील ता सो या॥२५॥ सो प्रसिद्ध
रघुनाथ मे मैं इहै भालू की शा॥ उनि गुरु आदिक आन जन इन सन जा सआनी शा॥२६॥ निज निकृष्टता देखि सिथरा
मानि लन सं देहू॥ ताहि निवारन कीजिये सुनि रि सील गुण एह॥२७॥ चतुरथ सौलभ्य गुण ता कर
अर्थ विचार॥ उच्च वंश पुनि सहज ही मिलै सो सुलभ उदार॥२८॥ पद्मासन ब्रह्मादिक न उच्च न कहि
आवा य॥ सो मैं इहै आनि प्रीति करि सेवरी के घर आय॥२९॥ चक्रवर्ति नृपनन्द की इहै सुलभता धा रि॥ उच्च

Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

५

मना कोसकल उर दीजे भले निवारि॥ २॥ लख पंचम का हृण्य गुण ना सुअर्थ अनुमाना॥ पर दुख लखि अस
हस्ता सो कहए जिय जाना॥ २०॥ अथ भवन सुख त्यागि वन गवन किये रघुनन्द॥ अस रिषि का कुल देखि
कि हनै निसाचर वृंद॥ २१॥ कहए गुण को सुमिरि के जिय मे दृढ़ ना आनु॥ भवजी मदुख मेटि है गुण भानु
कुलभानु॥ २२॥ लख षष्ठम सुसक्ति गुण ना कर अर्थ विचार॥ अघन घटना करि समै सो जिय शक्ति निधारा॥
२४॥ सो समिधे रघुनाथ मे समन ताप पाप॥ मर कट वध अस्त्र पन कि पे विभीषन लंका नाथ॥ २५॥ निज सपरि
कर मथ निज प्राण ति को सदेह॥ ना हि निवारन की जिये सुमिरि शक्ति गुण येह॥ २६॥ सप्तम सिय रघुनन्द
को ज्ञान सगुण हि पदेखि॥ ना को अर्थ विचार निज चित्त सुभीती लेख॥ २७॥ सर्व देस सर्व काल सब वस्तु
कर मल होय॥ भक्ति डोर मुख कर न ज्ञान ज्ञान जिय सोय॥ २८॥ जोग शक्ति सिय राम के दोउ उनउर
मधि हि॥ सर्व देश सब काल मे कहुं न निभी निविछोह॥ २९॥ सानस मर्म वचन करे दया सो अष्टम लेखि॥ क
रहे कहु विश्वास दृढ़ दीन दुखित जो हि देखि मे के॥ ३०॥ हेनर हि न पर दुख लखी चित्त दुखी जे हि होय॥ दु
नि सहए इच्छा चले दया जानु जिय सोय॥ ३१॥ स्त्री पर वध विप्र गो मिले खिडु खिन भये रघुनाथ॥ प्रण की को अब

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

मारिहौं कुटम्बसहित देशमाथ॥४२॥ कृषिक समकृतभक्ति गुणकृषाधस्योनेहिमान॥मानवसो इ
कृतज्ञताकविज्ञनकरनवखान॥४३॥नाथअचलकियोलैकोमाथनवावनदेखि॥वेदसोगावतगाथरघु
नाथकृतज्ञविशेषि॥४४॥असकृतज्ञतादेखिकेसरनसिधारिरेराम॥जनकरनीरक्षनहींसब विधि
पूरनकाम॥४५॥दसमैबलगएदेखअवसोपुनिषष्ठमकार॥आत्मसशस्त्रसबन्धुरैमिलिविद्यादश
चार॥४६॥दर्पदलनसबन्धनकोशिवकोदंडचढायो॥वरमालाउरधारिनवआत्मनवलकविगा
थो॥४७॥शस्त्रबलाश्विकजानुजहैंहनेसरुसदशचारि॥औरिजहैंजसपोगजहैंसमनीतेयविचार॥
४८॥संगरमेंहरिहन्योदशमुखपरिकरबलंका॥सोबन्धुबलजानियेजोजहैंजसउंका॥४९॥समासमी
नाआदिवकुदानकरनरघुनन्द॥सरनापकसनकोटिसमभोग्यमसुखकन्द॥५०॥त्यौंरैवलपु
निजानिक्रियजानिपुनिमनिबलनलसभासु॥विद्याकौशिकदैसकलयज्ञरक्षायोजासु॥५१॥अतिक
रालसंकरधनुषपिनाकहारेभूपाल॥सोगजबंकजनालइवतोसोश्रीरघुलाल॥५२॥अत्रविचित्रविचा
रियेमहावीर्यरघुनन्द॥तेजजहैंआनमानुलखिमन्दभयेभगचन्द॥५३॥लखिअनुजनमख
चन्द्रमामिथिलापरकीबाल॥नैननहिंनहिंनैकहूंपलकनमाननसाल॥५४॥इतअतीवमाधुर्यशनि

Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

कहयो मनिश्चय आय॥ अयोकुंजुक फूल वाइनो आजे वइहाँ देखाय॥५५॥ सँसिंधुसीकरँके
करनेगिनैजो कोय॥ ताहूँ सँर घुनाय की गुन की मिति न हि होय॥५६॥ गनलक्षनदरसक हेजहाँप
यासंयोग॥ अवउपासनाअंग सुनआकरिसिटे अयोग॥५७॥ उपदेसानिष्ठापुनिरा मभक्ति मेंआनि
धनुषादिकसंस्कारमेंनिहिविसेषताजान॥५८॥ अतिआनन्यताधारणाषट्परत्वमाधूर्य्य॥ तासुउ
क्तिअहपुक्तिवरुनामेंअनिचानुर्य॥५९॥ सानअंगअरुमुख्यविषलखउपासनाकेर॥ औरोक
हेअनेकसोएर्वआगमेंहेर॥६०॥ उपअव्यपसमीपबैठनिआसआप्यर्थकधानु॥ षट्अन्यकरि
सिद्धिसोअरुउपासनाव्यानु॥६१॥ जाकरकेउपास्यकोसाअउपासक होय॥ कहियेताहिउपा
सनाविनुगुरुलहैन कोय॥६२॥ विनउपासनाज्ञानजियअरुज्ञानसवनुव्यु॥ रूपनीविनाअ
नीकेनीसोहतनाहिनकुच्छ॥६३॥ कृतिकृपानाविज्ञानाअरुज्ञानआरतिा॥ येसवरहितउपास
नाविनुवरजिमीवरनत॥६४॥ अतिलघुदेवउपासनाकरतहुँअमतिको य॥ क्षतिकतिनक
सीचांदनीतरिनअंधेरीहोय॥६५॥ नाएषणीउपासनानासअरुअतिजान॥ करनकोउपकरांत
नअपवर्गदअनमानि॥६६॥ षटनरसदेउपासनोरअतिपाकीजान॥ जैसेदेवनकंदकेगउचीनीसकुचीना॥६७॥

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

नरहरि बामनपर सुधरकृष्णचन्द्र बलिराम॥मच्छकच्छबाराह पुनिबुध कलंकिग्रसिराम॥६२॥
वेदसहग्रवनारसियराम उपासकजान॥रामसियाषट्साजिकेजिनउरधारेग्रान॥६३॥रहित
सकलग्रभिलाषकरि उभयकोडकरि हीन॥सुमिरनसियरघुनन्दकोना हिभक्ति जियचीन॥६४॥
सोउनित्रिधाबखानिये साधनभावग्रहप्रेम॥साधनसोइजानियेजामेंबहुविधिनेम॥६५॥ग्रद्धा
ग्रहविस्रंभउनिनिजसजातिकरसंग॥भजनग्रक्रियाधारणानिष्ठारुचिरत्रभंग॥६६॥पुनिग्रन
र्थकरत्यागसबहुलक्षनउरग्रानु॥प्रथमहिंसाधनभक्तिकेनाकरभावबखान॥क्रियाहं
सकेप्रथमहीं उपजेउरग्रानन्द॥क्रियाविषेदुखसहनतापकलेसग्रालसफंद॥६७॥येतीनोंबु
धकहतहैं ग्रद्धाकेग्रनुभाव॥ग्रद्धासंपतिलोपघरतववस्तुकीचाव॥६८॥सुनिलखिनहिलोकी
कमेदरसनहींग्रम्लाय॥सोसुनिचितसाचीगहैसोविस्वासुभाय॥६९॥जामेकरियेभावपुनिसो
इपरिच्छालागि॥बहुविधिचितउद्वेगहीनदृढ़िताहुनहित्यागि॥७०॥ग्रहनिष्ठाग्रनभावलखि
जाकेउरमेहोय॥ताकोकुछुसंसैनहींमिलेरामसियदोय॥७८॥जामेप्रीतिलगाइयेलखिकुछु

Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

नेहि विपरीत ॥ जिय अभाव आवे नहीं सो नित्य की रीत ॥ ७० ॥ दरस परस मेरे सुख बड़ो विन दरसे दुख भूर ॥ इहु चिके अनभावत लखि करे नर छुवर दूर ॥ ७१ ॥ भाव भक्ति न वा जानिये इहु जिय होय अभाव ॥ क्षमा विरक्त अमान ता को लक्षण नहिं जाय ॥ ७२ ॥ मिलन आस रज वे छुचित्त पनि उत्केठा जान ॥ आशंकीन इल कथन प्रीति विसनि अस्थान ॥ ७३ ॥ नाम गान सेहु चिसदा इहु न वलक्षण होय ॥ सियर छुन न्दन मिलन को अधिकारी लख सोय ॥ ७४ ॥ विघ्न अनेक न होयत उ प्रीति रीति नहिं हान ॥ आशंकीन न वठै सो लख प्रेम प्रधान ॥ ७५ ॥ लिहु लक्षण जानिये चित्त न विचलित होय ॥ न धन विलग न मान हीं न जे विछेदक जोय ॥ ७६ ॥ सियर छुवर संवन्ध करि दुख सो सुख इव भास ॥ सियर छुवर संवन्ध विसुख सो दुःख निवास ॥ ७७ ॥ इहु लक्षण अनुराग के अनुराग जीउ र जानु ॥ ता को करि सत संग छु निअपने हिउर आनु ॥ ७८ ॥ लख लक्षण इहु अपके दृढ विश्वास जो होय ॥ वाठै उर अति सख्य ता निज सम सो लखि कोय ॥ ७९ ॥ लख उ पास ना छि विधसो त्रै स्वर्य सिय पेक ॥ छि निषेमा धूर्य्या शया धारे यथा हृचेक ॥ ८० ॥ छि

Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur

CC-0. In Public Domain. Digitized by Sarayu Foundation Trust and eGangotri

भुज्ञपरात्वरएमसियरासादिकक रिबुन्क॥ध्यावेनिजगोलोकसोऐस्वर्याश्यउन्क॥८-॥तथा
अवधमेध्यावहींरासादिकवडुरंग॥बीचबीचमिविलासवनचहूंबंधुमिलिसंग॥८१॥माधुर्यासमज्ञा
नसोरसज्ञजनन सुखमूल॥करेसदासोइभावनाग्रहिलक्षनअनुकूल॥८२॥अथभक्तिरसवर्ननं
जानुभावप्रतिबिम्बजोउरमुमुक्षुकेहोय॥भावमुछोयाजानियेअन्तहृदयपुनिजोय॥८३॥अ
स्थायीअनभावपुनिलखुविभावदोउरीति॥सात्विकअहसंचारिपुनिअरसपरसरिउमीत॥८४॥
रसाभासउनिजानियेविनुजानेरसरीत॥रसाश्रयाजोकरनसोहोतअंगविपरीत॥८५॥उद्दिपन
आलम्बअहदोयविभावजेहिजोय॥उद्दीपनभूषनवसनआलम्बनपुनिदोय॥८६॥येकविषय
आलम्बपुनिद्वितीयअलेवनधार॥यारासआधारपुनिविषयरूपगुनासार॥८७॥विषयवि
धानकरीहियेभजेसोविषयालम्ब॥विषेअनिच्छअधारकोभजेआश्रयालम्ब॥८८॥मनोविका
रसुभावपुनिनद्वोधकअनुभाव॥हृदेउदयविनभावकेप्रीतममिलनन चाव॥८९॥सात्त
सात्वयवात्सल्यपुनिसमअहश्रृंगार॥येपांचोरसभक्तिकेतामेसुचिउदार॥९-॥प्रथमसांत

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

रस केसुनहुँ विविध विभावअनुभाव॥ सात्विकअरुसंचारिउ निथाइचिन्हजनाव॥९१॥ अब्रह्म
परमानमानुरकारभगवान॥३त्यादिकगुणआश्रयणसोआलम्बनजान॥९२॥ निसदिननत्व विचा
रउनिनिवसनगउद्यान॥इहलक्षणसबसानारसउद्दीपनजिमजान॥९३॥नासिकाअकरिदृष्टि
निधरेवेषअवधूत॥निर्ममतानिर्वीकानाथयासास्त्रअनसूत॥९४॥अगंहेवीजननसोनहिंकुछु
जिमसेद्वेष॥पुनिभगवन्तकेभक्तजननासुनप्रीतिविसेष॥९५॥अनुभावरहसांनकेसोतीकउ
रहोय॥ताकीसंगतिरशिकजननसप्रेमुकरेनमोय॥९६॥स्तंभस्वेदरोमांचउनिकंपअहस्वरभेद॥
वैवर्ण्यअश्रुप्रलयनसात्विकाभेद॥९७॥मतिधृतिअरुनिर्वैरताअपस्मृतीसंक्षोभ॥चिंतकी
दिसंचोरिउनिसांति॥९८॥इतिसानः॥अबचिन्तदेसउदास्यकेअनुभावादिकचिन्ह॥चिन्हवि
नानहिंलखिपरेभावरीतजिमिभिन्न॥९९॥सर्वेस्वरसरवज्ञप्रभुअतिसयकृपानिधान॥इत्या
दिकगुणआश्रयणसोआलम्बनजान॥९२॥आठोअंगप्रनामउनिपादप्रछालनपान॥कृपादृ
ष्टिकीचारुनितसोउद्दीपनजान॥९९॥अर्जीसिरधारेसदासेवनचतुरअमान॥ठीठवचनबोलेन

Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

हीं ३ रूप्रनभाव वखान॥११२॥ पूर्वकहेनेप्रत्य जुनप्रहसात्विका जान॥नन मन को जो छोभ
हीं ना हि सात्विका मान॥११३॥ हर्षगर्वचिंतास्मृतिमतिधृतिप्रहनिर्वेद॥तर्कसंकपनिदीनता सब
संचारि सवेद॥११४॥ जियप्रभुना कोजान पुनिसभ्रम प्रादर दान॥स्वामिभाव करिप्रीतिरूथाह भाव
जियजान॥११५॥ प्रथमहिंनेसियराम को दरसनहीं सोप्रयोग॥दरसपुनिप्रीतपरेना करैं जानिवियोग
११६॥विपुलप्रपुलदोइयोगमेंरूदसदसावखानि॥कृसताजडताजागरनप्रनालसधृतिहान॥११७॥
ज्वरतापादिकव्याधपुनिजरनिप्रंगसोजाना॥वाढेचिंतउन्मत्तनामूर्छामरनबखान॥११८॥इतिदास्यः॥
प्रवचरननहौं सख्यकेप्रनुभावादिकधर्म॥सखाचारविधिजानसोसुहृदसखाप्रियनर्म॥११९॥सुहृ
दसखासोप्रधिकवयवत्सलताकरियुक्त॥कुछकन्यूनवयसोसखादासधर्मकरिउक्त॥१२०॥
तुल्यवयसोप्रियसखानर्मसखालहुसोय॥रमणिरूपधरिरमणकीजियलालसासोहोय॥१२१॥
सरसमलोनेनेहनिधिरुचिरवेसुजान॥इत्यादिकगुणप्राश्रयणसोप्रवलम्बनजान॥१२२॥
चपलतुरंगनेफरनीमृगतकिमारनबान॥करिप्रालक्षनवेधनीसवउद्दीपनजान॥१२३॥

Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

धरि गलभुजवत लावतीयेकसंगभोजनसैन॥अनुभावहहसख्यकेसवविधिसुखकेअैन॥१२४॥
पूर्वकहेनेसात्विकारोसंचारिकअत्र॥हर्षगर्वआदिकसकलसंचारिहुंजोनत्र॥१२५॥सख्यर
तीस्थाइभुनिश्चलप्रेमअरुनेह॥अनरागअसजानियेमनोयेकदोइदेह॥१२६॥दसावियोगअयो
गमेपूर्वकहीदससोय॥अवेवत्सलरसकहतहौंकरिविवेकसोजोय॥१२७॥इतिसख्यः॥अनिस
कुमारसुलक्षनेविनईसीलसुभाव॥हरुगुणसवरघुनाथकेसोआलम्बविभाव॥१२८॥मृदुहंसिनी कें
नरिबोलनीअोरँवालसुभाव॥हरुगुणसवरघुनाथकेसोउद्दीपनभाव॥१२९॥अगपोछिलै
अंकपुनिकरिमस्तकआघ्रान॥लालेनपालनसकलविधिसोअनुभावबखान॥१३०॥पूर्वकेहेने
सात्विकासंचोरिहुंभुनिसोय॥दसाबियोगअयोगमेपूर्वकहोदससोय॥१३१॥वत्सलनास्थाइभुनिश्च
लप्रेमअरुनेह॥अनुरागअतिहिंसुजानीयेविछुरेरहेनदेह॥१३२॥इतिवात्सल्यः॥अवबर
नेनहौंललितरसललिताईकीखानि॥ललितचित्तधारनकरेरुचिचिन्तनहिंमान॥१३३॥
कवैसुकनकपोलपरविलसतअधरडलाक॥सिरसुरंगपगियालसजतुरैकलंगिमुलाक॥१३४॥

CC-0. In Public Domain. Digitized By Siddhanta eGangotri Gyaan

अंसन पर अलकैं लसत भुज अंग दछ वि देत॥ छुरा छवी लोकैं टमे चित्त चोरये लेत॥१३५॥ मंजु
नस फरी से च पल अनिमा रे मनो बान॥ युग छवी पनी हनन भौं हु चाप संधान॥१३६॥ ललित कप
नि कहि वसन की ललित लट कनी चाल॥ ललित धनुष सर कर धर ललिता ईनि खि लाल॥१३७॥
ललिता ईर छुनन्द की सो आलंब विभाव॥ ललित रसा श्रित जनन को मिलन सदा मन चाव
१३८॥ कोकिल शब्द वसंत ऋतु सो उद्दीपन जानु॥ मन्द हु सनि हुंग कैरनी सो अनुभाव वखानि॥१
३९॥ पूर्व कहे जे सात्विका स वे सुदीपा जानु॥ उग्र अरु आलस्य विनु सं चारि हुं अनुमानु॥१४०॥
अस्था ईं प्रिय तारनी प्रणय प्रेम अरु नेह॥ अनुराग अस वर स्पर वार तिनन मन ग्रेह॥१४१॥ दशा वियो
ग प्रयोग मे पूर्व कहीं दस सोय॥ अवर सखि उन्मीलता कहौं जहां जस होय॥१४२॥ इति रस राज:॥ अ
थ रस मित्रता वैरी वर्नन॥ मैत्री सोन अरु हास्य के अरस पर स जान॥ वत्सल सख्य न टस्थ दो उ सु सों
चि स पत्ल अनुमान॥१४३॥ सख्य अरु शृंगार दो उ अरस पर स लख मीत॥ सोन अरु वत्सल दो उ
इरु सुचि सों अति विपरीत॥१४४॥ सुचि स पत्ल दो उ सख्य के ल खु न टस्थ न हिं मीत॥ वत्सल रस को उर
सन सों रा खन न हिं हि य हीन॥१४५॥ दो ट्ठ न ल खु पर स्पर दास्य अरु शृंगार॥ रिपु रस सों ग धा रे न हीं

CC-0. In Public Domain. Digitized By Sarayu Foundation Trust and eGangotri

११

ईहविधिज्ञानन हार॥१४६॥इतिरसमिश्रनावैरीपरस्पर॥रसाभासतद्सांतकेसमनाबुद्धिविना
स॥निजप्रभुनिकटसोधृष्टनारसाभाससोईदास॥१४७॥यथाद्विजनकेमध्यमेवेकसखायक
दास॥नवजानवज्जियसख्यकीमईरीनग्राभास॥१४८॥पुत्रादिकवयग्रधिकलखिलालना
दिकीहनि॥रसाभासवात्सल्यकीनवेलीजेपहिचानि॥१४९॥रसाभासशृंगारकीनदपनिजि
यग्रनुमानु॥विहरनइच्छुयेककीयेकनहीमनमानु॥१५०॥इतिभक्तिपंचरससांगवर्णनसमाप्त
वनिनाक्रन्दनमध्यजवरघुवरकरनविलास॥सुचिग्रहग्रद्भुतरंस्यहहनीरसनिनिवास॥१
५१॥सखामंडलीमध्यजवविलसतरघुकुलचन्द॥वीरग्रहग्रद्भुतहासहहमुख्यसख्यसुखकंद
१५२॥दास्यपरीकरमध्यजवराजतगुननिधिराम॥दस्तलसाकोसघैटकरिदेतसवनिग्रभिराम
१५३॥पुनिवशिष्ठग्रादिकनकेनिकेनिकटदास्यग्रनुभाव॥करिग्रानंदितकरतग्रतिहहैवठावतचा
व॥१५४॥रसिकसिरोमनिरसनगृहरंघुनन्दनग्रतिप्य॥रसिकसंगविनुनेकुंजाननहिंहहभेव
१५५॥हहसिद्धानग्रादिमहदवसेजासुउरधोम॥ध्रुतिहिनगननिश्रितमतनमतोम॥१५६॥२५०॥इति
श्रीसीतारामसिद्धांतमुक्तावलीश्रीजनकराजकिशोरीसरनविरचितायांउत्तरभागश्रीग्रवधग्रनोद

११

Courtesy: Prof. Arnab Bhattacharya IIT Kanpur